DSSSB TGT & PGT

Part-B

SCHOLAR BATCH

संस्कृत

कारक प्रकरण

LIVE 06-05-2024 05:00 PM

कारक प्रकरणम्

कारक शब्द की परिभाषा

'कारकः' शब्द की व्युत्पत्ति डुकृञ् (कृ) धातु के साथ 'ण्वुल् ' प्रत्यय के योग से 'कारकः' शब्द बनता हैं।

कारक का अर्थ:

"क्रियान्वयित्वं कारकत्वम्"

"क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्"

"क्रियां करोति इति कारकम् "

कृ + ण्वुल्

युवोरनाकौ

यु → अन्

वु → अक

संबोधन (8) — हे राम!
संबंध (6) — नृपस्य
कर्ता (1) — मोहनः
अधिकरण (7) — स्वभवने
अपादान (5) — कोषात्
सम्प्रदान (4) — याचकेभ्यः

हे राम! नृपस्य पुत्रः मोहनः स्वभवने कोषात् याचकेभ्यः

हे राम! नृप का पुत्र मोहन अपने भवने में कोषा से — याचकों के लिए

स्वहस्तेन धनं ददाति। — क्रिया

करण (3) — स्वहस्तेन
कर्म (2) — धनं

अपने हाथ से धन को देता है।

- कर्ता
- कर्म
- करण
- सम्प्रदान
- अपादान
- अधिकरण

योगात्मक (विभक्ति प्रधान

श्लिष्ट

संस्कृत

↓

श्लिष्ट बहिर्मुखी संयोगात्मक

↓

विभक्ति मिलं

हिन्दी

↓

श्लिष्ट बहिर्मुखी वियोगात्मक

↓

विभक्ति भिन्न

विभक्ति

कारक विभक्ति

उपपद विभक्ति

तृतीया

रामेण सह सीता वनं गच्छति ।

राम के साथ सीता वन को जाती है,

- वाक्य में जिसके द्वारा क्रिया की सिद्धि हो, उसे कारक कहते हैं (क्रियाजनकत्वं कारकत्वम्)।

- किसी वाक्य में क्रिया के सम्पादन में सहायता करने वाले को कारक कहते हैं (क्रियां करोति निर्वर्तयतीति कारकम्)।

उदाहरणार्थ

अपादान कर्म

हे मुनिः ! दशरथस्य पुत्रः रामः राजभवने कोषात् हस्तेन याचकेभ्यः धनं ददाति

संबोधन संबंध कर्ता अधिकरण करण सम्प्रदान क्रिया

1. कः ददाति ? ⇒ रामः (कर्ता) प्रथमा विभक्ति
2. किं ददाति ? ⇒ धनं (कर्म) द्वितीया विभक्ति
3. केन ददाति ? ⇒ हस्तेन (करण) तृतीया विभक्ति
4. केभ्यः ददाति ? ⇒ याचकेभ्यः (सम्प्रदान) चतुर्थी विभक्ति
5. कस्मात् ददाति ? ⇒ कोषात् (अपादान) पञ्चमी विभक्ति
6. कुत्र ददाति ? ⇒ राजभवने (अधिकरण) सप्तमी विभक्ति

संस्कृत में सम्बन्ध तथा सम्बोधन का क्रिया से सीधे सम्बद्ध नहीं होने के कारण सम्बन्ध तथा सम्बोधन को कारक नहीं माना जाता है।

इस वाक्य में दशरथस्य पद का रामः (कर्ता से) सम्बन्ध है, किन्तु क्रिया ददाति से सीधा सम्बन्ध नहीं है। इसी तरह हे मुनिः ! का भी क्रिया से सीधा सम्बन्ध नहीं है।

- इस तरह कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान तथा अधिकरण ये छः कारक हैं:

कर्ता कर्म च करणं च सम्प्रदान तथैव च।
अपादानाधिकरणमित्याहुः कारकाणि षट् ॥

विभक्ति प्रयोग

विभक्ति सभी शब्दों के अन्त में 'सु', 'औ', 'जस्' आदि प्रत्यय लगते हैं। इन्हीं प्रत्ययों के आधार पर उनके सात विभक्तियों के रूप में चलते हैं। ये प्रत्यय 'सुप्' प्रत्यय कहलाते हैं। इन्हीं को 'सुप् विभक्ति' भी कहते हैं। धातुओं में 'ति', 'तस', 'अन्ति' आदि प्रत्यय लगते हैं। ये तिङ् प्रत्यय कहलाते हैं। इन्हीं प्रत्ययों को 'तिङ् विभक्ति' भी कहते हैं।

7 विभक्ति × 3 वचन = 21 शब्दरूप (सुप् = 21) प्रत्यय

"सुप्तिङन्तं पदम्"

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सु	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट्	शस्
तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्

सुप्

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

	कारक	विभक्ति	चिन्ह
1.	कर्त्ता	प्रथमा	ने
2.	कर्म	द्वितीया	को
3.	करण	तृतीया	से, के द्वारा
4.	सम्प्रदान	चतुर्थी	के लिए
5.	अपादाना	पञ्चमी	से, अलग होना
6.	सम्बन्ध	षष्ठी	का, की ,के, रा, री, रे
7.	अधिकरण	सप्तमी	में, पर, ऊपर
8.	सम्बोधन	प्रथमा	हे! अरें! भो!

1. कर्त्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

सूत्र "स्वतन्त्रः कर्त्ता"

जो क्रिया को करने के लिए स्वतन्त्र होता है, वह कर्त्ता कहलाता है। कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है;

यथा— रामः पठति ।

यहाँ 'पढ़ने' की क्रिया का स्वतन्त्र रूप से सम्पादक राम है। अतः यह ही कर्त्ता है और कर्त्ता में प्रथमा विभक्ति होती है ।

कर्ता कारक (प्रथमा विभक्ति)

सूत्रः "स्वतन्त्रः कर्ता" (1/4/54)

वृत्तिः यः क्रियासिद्धौ स्वतन्त्र्येण विवक्ष्यते, तत् कारकं कर्तृसंज्ञं भवति।

सूत्रार्थः जो क्रिया की सिद्धि अर्थात् जो क्रिया को करने में हो, वह वाक्य में कर्ता कारक होता है।